तुम कुछ, कुछ तुम्हारा अंदाज़-ए-गुफ्तगू...

यादें साक्षात्कारों की

यूनुस ख़ान
801 कासा बेलीसिमो प्लॉट नंबर 9, गोराई 3 बोरीवली पश्चिम , मुंबई 91
मो. 9892186767

भोपाल में बिताए बचपन के दिनों को याद करता हूं तो आंखों के सामने वो गली-मुहल्ले आ जाते हैं और कानों में विविध-भारती गूंजने लगता है। भोपाल की उन गलियों और सड़कों पर चलते हुए हम हमेशा विविध-भारती के दायरे में होते थे। यानी घर से स्कूल तक का पैदल सफ़र विविध भारती की आवाज़ की गिरफ्त में ही तय होता था। हर घर और दुकान से रेडियो की आवाज़ आ रही होती थी। ये वही दिन थे जब पापा अपनी साइकिल पर बैठाकर एक रविवार आकाशवाणी भोपाल ले गए थे बच्चों के कार्यक्रम में हिस्सा लिवाने के लिए। बाल-सभा में जाने का सिलसिला वहीं से शुरू हुआ था। तब शायद अंदाज़ा नहीं था कि एक दिन विविध-भारती में माइक्रोफोन संभालना होगा और तमाम महत्वपूर्ण शख्सियतों से रूबरू होने का मौक़ा मिलेगा। मुझसे कहा गया है कि अपने साक्षात्कारों से जुड़ी हुई यादें आपसे बांटूं।

यादों के दरीचों से जाने कितनी-कितनी आवाज़ें कानों में गूंज रही हैं। पर अपना पहला इंटरव्यू फौरन ही याद आ रहा है। सन 1996 में मैंने विविध-भारती पर अपना पहला इंटरव्यू लिया था गीतकार योगेश जी का। मुझे याद है कि जब पता चला कि कल योगेश जी आ रहे हैं और मुझे उनसे बात करनी है तो जैसे पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे। और ये सहज भी था। जिस गीतकार के गाने कंठस्थ रहे हों, जिसके आप मुरीद रहे हों- उससे रूबरू होना सौभाग्य नहीं तो क्या है। तब वो ज़माना था जब हम काग़ज पर सवाल बाक़ायदा लिख लिया करते थे। हालांकि इतने बरस बाद अब बिना काग़ज़ के ज़ेहनी तैयारी के साथ इंटरव्यू लेते हैं। बहुत बरस बाद जब फिर योगेश जी से हाल में और भी लंबा इंटरव्यू लेने का मौक़ा मिला, तो हमने मिलकर पुराने दिन फिर याद किये। उस पहले इंटरव्यू और अभी वाले इंटरव्यू को मिला दें तो योगेश जी का पूरा

“
सन 1996 में मैंने विविध-भारती पर अपना पहला इंटरव्यू लिया था गीतकार योगेश जी का। मुझे याद है कि जब पता चला कि कल योगेश जी आ रहे हैं और मुझे उनसे बात करनी है तो जैसे पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे। और ये सहज भी था। जिस गीतकार के गाने कंठस्थ रहे हों, जिसके आप मुरीद रहे हों- उससे रूबरू होना सौभाग्य नहीं तो क्या है।